शोध मंथन Vol. XI No.I Jan.-Mar. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

'निराला' के काव्य में मानवतावाद

डॉ॰ सुनीता देवी
सहा0 प्रो0, हिन्दी विभाग,
के.वी.ए.डी.ए.वी.कॉलेज फॉर वूमैन, करनाल (हरियाणा)
Email: sunitasalaria1210@gmail.com

सारांश

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में मानवतावाद सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुआ है। नैतिकता का हनन करने वाले तत्त्वों के प्रति उन्हांने जबरदस्त विद्रोह प्रकट किया है। 'निराला' जी मनुष्य के जीवन को शक्ति प्रदान करने वाले जीवन मूल्यों का दृढ़तापूर्वक समर्थन करते हुए मानव जीवन को असशक्त बनाने वाले तत्त्वों का डटकर विरोध करते हैं। तुलसीदास, राम की शक्ति पूजा, महाराज शिवाजी का पत्र, बादल राग, विधवा, भिक्षुक, जागरण आदि कविताओं में निराला जी मानवतावादी भावों का पुरजोर समर्थन करते हैं। सत्य, अहिंसा, त्याग, करूणा, प्रेम, दया, मैत्री आदि मानवीय मूल्यों का उन्होंने अपने काव्य में पूर्णतः समावेश किया है। अतः निराला जी सच्चे अर्थों में मानवतावादी कवि हैं।

प्रस्तावना

प्रवृतिगत जीवन से ऊपर उठाकर मानव–जीवन का उन्नयन करने वाले तत्त्वों को मानव मूल्य कहते हैं।[1] ये वस्तु या व्यक्तियों के प्रति मंगलविधायक दृष्टिकोण हैं। 'दया, करूणा, प्रेम, मैत्री, त्याग, अहिंसा आदि ऐसे ही मानवीय मूल्य हैं।[2] नैतिकता और मानव–मूल्यों को धारण करने के कारण ही धर्म को संस्कृति का सर्वोच्च मूल्य माना जाता है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में मानवतावाद सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुआ है। नैतिकता का हनन करने वाले तत्त्वों के प्रति उन्हेंने जबरदस्त विद्रोह प्रकट किया है। ''निराला सच्चे अर्थों में मानवतावादी कवि हैं। अतः वे मानव जीवन को शक्ति, गति और मुक्ति की ओर अग्रसर करने वाले मूल्यों का दृढ़तापूर्वक समर्थन करते हैं और मानव को असशक्त, गतिहीन या दुर्गतिग्रस्त तथा पराधीन बनाने वाले तत्त्वों को सर्वत्र चुनौती देते चलते हैं।''[3]

मानवतावादी भावना के कारण ही 'निराला' ने अपने प्रसिद्ध काव्य 'तुलसीदास' में मुगल सभ्यता के प्रभाव स्वरूप भारतीय संस्कृति के पतन का जो चित्रण किया है, वास्तव में वह 'निराला' के समय में अंग्रेजी शासन से पदाक्रान्त समाज के नैतिक पतन का ही चित्रण है। परस्पर फूट और मैत्री के अभाव के कारण सम्पूर्ण भारतीयता का 'दुस्तर जलद–जाल' (विदेशी शासकों) में घिरकर 'भ्रांत' हो जाना, भारतवासियों के नैतिक पतन की ओर संकेत करता है।[4]

'राम की शक्ति पूजा'कविता में जाम्बवान की प्रेरणा से राम शक्ति साधना में रत हो जाते

हैं और साधना सफल होते ही – 'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन' का वरदान देते हुए 'महाशक्ति' राम के बदन में लीन हो गई।[5] यहाँ महाकवि 'निराला' ने 'रावण, रावण, लम्पट, खल कल्मष, गताचारी[6] पर 'साधु, साधक, धीर, धर्म–धन धन्य राम[7] की विजय दिखाकर मानवतावाद की स्थापना की है। इसी प्रकार जब हनुमान जी क्रोधित होकर – 'महाकाश' को निगलने के लिए लपके तो अंजना–रूप 'महाशक्ति ने उन्हें उनके 'सेवक धर्म' का बोध कराया जिसके परिणाम स्वरूप वे शान्त हो गए –

'तुम सेवक हो, छोड़कर धर्म कर रहे कार्य।'[8]

'तुलसीदास' काव्यकृति में जब तुलसीदास 'कुलमान' की अवहेलना करके अपनी ससुराल पहुंच जाते हैं तो रत्नावली 'नारी मर्यादा' की रक्षा के लिए 'मर्यादा पुरुषोत्तम' राम से प्रार्थना करती है। इसके पश्चात् 'कुलधर्म' का उल्लंघन करने वाले तुलसीदास को धिक्कारते हुए कहती हैं –

'धिक! धाए तुम यों अनाहूत
धो दिया श्रेष्ठ कुल–धर्म धूत,
राम के नहीं, काम के सूत कहलाए।''[9]

'पंचवटी प्रसंग' में काम–वासना से पीड़ित शूर्पणखां राम से प्रणय निवेदन करती है तो राम उसे स्पष्ट कह देते हैं –

''सुन्दरी, विवाहित हूँ, देखो यह पत्नी है।''[10]

इन शब्दों के माध्यम से 'निराला' जी ने राम के मुख से कहलवाया है कि विवाह मर्यादा है और अपनी पत्नी को छोड़कर पर स्त्री–गमन अनैतिकता है। किन्तु कामवासना में अन्धी नारी मर्यादा–विहीन होकर राम को 'नराधम वंचक' और 'निर्गन्ध कुसुम' तक कह देती है। इतना ही नहीं वह तो काली नागिन बन कर 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' की मर्यादा को डसने पर उतारू हो जाती है तो उन्होंने उसके नाक–कान कटवा कर एक ओर तो वीरोचित धर्म का पालन किया, दूसरी ओर अपनी मर्यादा की भी रक्षा की। 'निराला' जी मर्यादा की रक्षा और पालन को मानव धर्म मानते हैं।

'निराला' स्त्री–पुरुष के नैतिक काम सम्बन्धों पर बल देते हैं। इसीलिए तो उनके काव्य में कहीं भी काम–भावना का अनैतिक रूप दिखाई नहीं देता। 'जुही की कली' और 'शेफालिका' कविताओं में भी पति–पत्नी की काम–क्रीड़ाओं का ही चित्रण किया गया है। 'बहू' कविता की 'बहू' तो समस्त उच्च मानव–मूल्यों से युक्त है। एक ओर वह सौन्दर्यमयी, मनमोहिनी और मनोरंजना है तो दूसरी ओर निष्काम प्रेममयी, शान्त–सुखदात्री, पति–परायण तथा विषयवासना को तुच्छ समझने वाली महान नारी है।[11]

'सेवा' एक श्रेष्ठ मानव जीवन–मूल्य है। 'निराला' जी ने 'बादल–राग' कविता में बादल को 'सेवा–वीर' के रूप में प्रस्तुत किया है जो अपनी सुख–सुविधाओं का त्याग करके सेवा–पथ पर चल पड़ता है –

''छोड़ अपना परिचित संसार,
सुरभि का कारागार,
चले जाते हो सेवा–पथ पर।''[12]

'निराला' जी ने 'पंचवटी प्रसंग' में लक्ष्मण में उदात्त मानवतावाद को समाविष्ट कर आदर्श की स्थापना की है –

पाए हैं इसने गुण सारे माँ सुमित्रा के
वैसा ही सेवाभाव, वैसा ही आत्म त्याग,
वैसी ही सरलता, वैसी पवित्र कान्ति।''[13]

मानवतावाद की स्थापना के लिए निरन्तर अभ्यायपर बल देते हुए 'निराला' जी ने मनुष्य को जीवन मूल्यों की प्राप्ति का मार्ग भी बताया है। 'निराला' के अनुसार निरन्तर अभ्यास से मन को ऊर्ध्वगामी अर्थात् 'उच्च स्तरीय चिन्तन का अभ्यास' बना लेने से ही श्रेष्ठ मानव जीवन–मूल्यों की प्राप्ति हो सकती है और स्वार्थ विलासी–वृत्ति, निर्दयता जैसी निष्कृष्ट भावनाएं नष्ट होती हैं और सेवा, दया, करूणा, परोपकार से युक्त उत्कृष्ट भावों का आविर्भाव होता है। इसी संदर्भ में 'जागरण' कविता की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं –

''अपना शरीर, निजता का सर्वस्व मन
वीरता थी सेवा में, सत्य–आदर्श की
ज्योति वह दिखाती थी
संचालित करती थी उसी ओर।''[14]

महाकवि 'निराला' के अनुसार मनुष्य का व्यक्तित्व श्रेष्ठ मानव जीवन मूल्यों के कारण समाज के लिए इतना कल्याणकारी बन जाता है कि प्रकृति भी मंगलकारी रूप धारण कर लेती है। 'निराला' जी ने प्रकृति का यही प्रभाव 'पंचवटी प्रसंग' में अभिव्यक्त किया है। राम, लक्ष्मण और सीता के मानवतावादी आचरण के कारण ही हिंसक जंगली जातियों में भी सेवा और परोपकार की भावना उत्पन्न हो जाती है तथा वे राहगीरों की हत्या करना छोड़ कर उन्हें मीठे फल और जल समर्पित करके मानवता की सेवा को अपना लेते हैं। फलस्वरूप सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है –

''हत्याएँ हजारों जिन हाथों ने की होंगी,
सेवा करते हैं वही हृदय के कपाट खोल,
मीठे फल, शीतल जल लेकर बड़े चाव से।''[15]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महाकवि 'निराला' के काव्य में मानवतावादी भावना का पूर्णरूपेण समावेश हुआ है। मानवता के विकास और उन्नयन के लिए नैतिकता और मानव मूल्यों का विशेष योगदान है। दया, परोपकार, मर्यादा, सत्य, सेवा से युक्त उच्च मानव मूल्यों की प्राप्ति के लिए मनुष्य को सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। इसी सन्दर्भ में 'कामायनी' की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं, जिनमें श्रद्धा मनु को मानवता का संदेश देती हुई कहती है –

''औरों को हँसते देखो मनु, हंसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।''[16]

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ॰ देवराज, भारतीय संस्कृति (हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, तीसरा संस्करण, 1966), पृ॰ **127**
2. निराला काव्य का सांस्कृतिक पक्ष (लेख) डॉ॰ हरिशचन्द्र वर्मा, (सप्त सिन्धु, फरवरी–मार्च, 1971, भाषा विभाग, हरियाण, चण्डीगढ़), पृ॰ **40**
3. निराला काव्य का सांस्कृतिक पक्ष (लेख) डॉ॰ हरिशचन्द्र वर्मा, (सप्त सिन्धु, फरवरी–मार्च, 1971, भाषा विभाग, हरियाण, चण्डीगढ़), पृ॰ **43**
4. तुलसीदास, निराला, भारती भण्डार, लीडर प्रैस, इलाहाबाद, छंद–2
5. अनामिका, निराला, भारती भण्डार, लीडर प्रैस, इलाहाबाद, 1963, पृ॰ **169**
6. अनामिका, निराला, भारती भण्डार, लीडर प्रैस, इलाहाबाद, 1963, पृ॰ **160**
7. अनामिका, निराला, भारती भण्डार, लीडर प्रैस, इलाहाबाद, 1963, पृ॰ **168**
8. अनामिका, निराला, भारती भण्डार, लीडर प्रैस, इलाहाबाद, 1963, पृ॰ **159**
9. तुलसीदास, निराला, छन्द 85
10. परिमल, निराला, पृ॰ **235**
11. परिमल, निराला पृ॰ **146–148**
12. परिमल, निराला पृ॰ **161**
13. परिमल, निराला, पृ॰ **218**
14. परिमल, निराला पृ॰ **240**
15. परिमल, निराला पृ॰ **226**